अष्टावक्र गीता: एक सर्गिक विवरण

आशीष सेमवाल[1], डा0 डी0 एन0 सिंह[2]
[1]शोधार्थी, दर्शन शास्त्र विभाग, सी0एम0जे0विश्वविद्यालय, रायभोई, जोरबाट, मेघालय
[2]शोध निर्देशक, दर्शन शास्त्र विभाग, सी0एम0जे0 विश्वविद्यालय, रायभोई, जोरबाट, मेघालय

महाकाव्य में अष्टावक्र के जीवन की कथा का वर्णन है।जिसका आधार बाल्मीकि रामायण का युद्धकाण्ड। महाभारत का वन पर्व अष्टावक्र गीता एवं भवभूति द्वारा रचित उत्तर रामचरितम् नाटक है। छान्दोग्य उपनिषद में वर्णित ऋषि उद्दालक के कहोल नामक एक शिष्य है।उद्दालक कहोल को अपनी पुत्री सुजाता विवाह में अर्पित करते हैं औरनवविवाहित दम्पती एक जंगल के आश्रम में जीवन यापन प्रारम्भ करते हैं। कुछ वर्षों के उपरान्त सुजाता गर्भवती हो जाती है।गर्भस्थ बालक एक बार रात्रि में अपने पिता ऋषि कहोल से कहता है कि उच्चारण करते समय प्रत्येक वैदिक मन्त्र में आठ अशुद्धियाँ कर रहे हैं।क्रुद्ध कहोल बालक को आठ अंगों दोनों पैर, घुटने, हाथ औरछाती एवं सिरद्ध से विकलांगहोने का घोर शाप दे देते हैं।

इसी मध्य जंगल में अकाल पड़ जाता है औरसुजाता अपने पति कहोलको कुछधनार्जनकरने के लिए मिथिला में राजा जनक के समीप भेजती है।जनक का बन्दी नामक एक दरबारी कहोल को शास्त्रार्थ में पराजित कर देता है औरवरुणपाश के द्वारा ऋषि को जल में डुबो देता है। उद्दालक सुजाता को उसके पति की दुर्दशा से अवगत कराते हुए इस घटना को बालक से गुप्त रखने को कहते हैं।

उद्दालक सुजाता द्वारा प्रसूत शिशु का नाम अष्टावक्र रखते हैं। उसी समय उद्दालक के भी एक पुत्र का जन्म होता है जिसका नाम श्वेतकेतु रखा जाता है। अष्टावक्र और श्वेत केुतभाइयों की तरह बड़े होते हैं और उद्दालक से धर्म ग्रन्थों का अध्ययन करते हैं।अष्टावक्र उद्दालक को अपना पिता एवं श्वेतकुतको अपना भाई समझता है। किन्तु दसवर्ष की आयु में अपने पिता के बन्दी के बन्धन में होने का ज्ञान होने पर वे अपने पिता को मुक्त कराने के लिए मिथिला जाने का निश्चय करते हैं।अष्टावक्र अपने मामा श्वेतकेतु के सहित मिथिला की यात्रा करते हैं और क्रमशः द्वारपाल राजा जनक और बन्दी को शास्त्रार्थ में हराकर अपने पिता कहोल को वरुणपाश से मुक्त कराते हैं।

घर लौटते समय मार्ग में महर्षि कहोल अष्टावक्र को समंगा नदी में स्नान कराते हैं और अपने तपोबल से उन्हें उनके शरीर की आठों विकलांगताओं से मुक्त करा देते हैं। अन्त में वशिष्ठ मुनि की प्रेरणा पर अष्टावक्र सीता एवं रामजी के राजदरबार में पधारते हैं और अयोध्या की राजसभा में सम्मानित किए जाने पर आनन्द का अनुभव करते हैं।

अष्टावक्र गीता के आठों सर्गों की कथा का संक्षिप्त

विवरण– सम्भव–

ज्ञान की देवी माँ सरस्वती का आह्वान करने के पश्चात् कवि महाकाव्य के प्रतिपाद्य के रूप में अष्टावक्र का परिचय देते हैं जो आगे चलकर विकलांगजनों के पुरोधा एवं ध्वजावाहक बने। ऋषि उद्दालक अपनी पत्नी एवं दस सहस्र शिष्यों के साथ एक गुरुकुलमें निवास करते हैं। ऋषि दम्पती के यहाँ सुजाता नाम की एक कन्या हैं जो शिष्यों के साथ वेदों का अध्ययन करती हुई बड़ी होती हैं। उद्दालक के कहोल नामक एक प्रसिद्ध शिष्य हैं। विद्या समाप्ति के उपरान्त उद्दालक कहोल को अपने उपयुक्त किसी ब्राह्मण कन्या से विवाह कर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने का आदेश देते हैं।कहोलसुजाता को अपनी जीवन संगिनी बनाने को इच्छुक हैं किन्तु सकुचाते हैं कि गुरुपुत्री से विवाह करना समीचीन होगा कि नहीं। उद्दालक कहोल की मनोभावना को समझ जाते हैं और प्रसन्नतापूर्वक अपनी पुत्री सुजाता कहोल को विवाह में प्रदान कर

देते हैं। उद्दालक भविष्यवाणी करते हुएकहते हैं कि सुजाता एक ऐसे पुत्र को जन्म देगी जो आगे चलकर विकलांगोंके लिए प्रेरणा स्रोतकी भूमि का निभाएगा। विवाह के पश्चात् नवदम्पती अपने आश्रम के लिए एक निर्जन जंगल का चयन करते हैं जहाँ कहोल शिष्यों को विद्याध्ययन कराना प्रारम्भ कर देते हैं। सुजाता सूर्य भगवान की उपासना करती है और एक ऐसे पुत्र की अभिलाषा करती है जिसका जीवन विकलांगजनों की समस्त समस्याओं हेतु समाधान प्रस्तुतकरे। सूर्यदेव उसकी अभिलाषा स्वीकार करते हैं। सर्ग का समापन सुजाता द्वारा गर्भधारण करने और दम्पती द्वारा आनन्दित होने की घटनाओं के साथ होता है।

संक्रान्ति–

सर्ग के प्रथम २७ पद्यों एक चौथाई भाग में महाकवि क्रान्ति की सम्यक् अवधारणा संक्रान्तिश् का शंखनाद करते हुएउसे व्याख्यायित करते हैं। उनके अनुसार सम्यक् क्रान्ति रक्त बहाने से नहीं अपितु विचारों के परिवर्तनसे संभव है किन्तु लोगों के लिए इस प्रकार की क्रान्ति कठिन हैं क्योंकि उनका अहं उन्हें इसके लिए अनुमति प्रदान नहीं करता। इसके पश्चात् कथाक्रम अग्रसर होता है सुजाता के पुंसवन एवं सीमन्तोन्नयन संस्कार सम्पन्न हो जाने के पश्चातए एक दिन कहोल आगामी दिन शिष्यों को पढ़ाने के लिए अपने ज्ञान की प्रवीणता हेतु देर रात्रि तक वेदों का उच्चारण करते हैं।श्रान्ति और चार दोषों भ्रम,प्रमाद, विप्रलिप्सा एवं करणापाटव के कारण कहोल वेद उच्चारण करते समय आठ प्रकार की जटाएं, रेखाएं मालाएं शिखाएं रथ, ध्वजा, दण्ड एवं घन पाठ संबन्धी अशुद्धियाँ करना प्रारम्भ करते हैं। सुजाता का गर्भस्थ शिशु कुछ समय तो इसके सम्बन्ध में विचार करता रहता है और फिर यह जान कर कि ऋषि प्रत्येक मन्त्र के उच्चारण में आठ प्रकार की अशुद्धियाँ कर रहे हैं क्षुब्ध होकर अपने पिता से मन्त्रों का शुद्ध अभ्यास करने औरअध्यापन न करने को कहता है। कहोल यह सुनकर चकित रह जाते हैं और यह कहते हुए कि वह परम्परा के अनुसार ही उच्चारण कर रहे हैं औरविस्मृति जीव के लिए स्वाभाविक है गर्भस्थशिशु से शान्त रहने के लिए कहते हैं किन्तु शिशु प्रत्युत्तर देते हुएपिता से रुढ़ियों का पुरातन शव फेंकने को कहता है और उनसे पुनः एक बार और उद्दालक से वेदों का अध्ययन करने की विनती करता है। कुपित कहोल शिशु को आठ वक्र टेढ़े अंगों के साथ उत्पन्न होने का शाप दे देते हैं। किन्तु तुरन्त इसके पश्चात् कहोल को पश्चात्ताप का अनुभव होता है। परन्तु शिशु अष्टा वक्रशाप को सहर्ष स्वीकार करते हुएअपने पिता से इस सम्बन्ध में पश्चात्ताप न करने का अनुरोध करता है।

समस्या–

यह सर्ग अपनी माता के उदर में स्थित शिशु अष्टावक्र के स्वगत कथन के माध्यम से उनकी समस्या का वर्णन करता है। सर्ग करुणरस वीर रस एवं आशावाद से परिपूर्ण है। प्रथम ३० पद्यों में सार्वभौमिक एवं अत्यधिक सशक्त समस्या के लिए विभिन्न रूपक चित्रित किए गए हैं। भगवान पर अगाधविश्वास एवं संकल्पयुक्त कार्य किसी समस्या से मुक्ति प्राप्त करने के सर्वोत्तम उपाय हैं और अष्टावक्र दृढ़निश्चयी हैं कि वे अपने संकट से मुक्ति पाकर ही रहेंगे। कवि के विशिष्टाद्वैत दर्शनके अनुसार आत्मा के आदि एवं अन्त और जन्म एवं मृत्यु से रहित और क्षणिक समस्याओं से परे सत्य स्वरुप का वर्णन5 से ८२ पद्यों में प्रस्तुत किया गया है। तत्पश्चात् अष्टावक्र कहोल से उनके पश्चात्ताप के सम्बन्ध में बताते हुए कहते हैं कि वे एक विकलांगका जीवन व्यतीत करने के लिए तत्पर एवं प्रतिबद्ध हैं। वे अपने पिता से भविष्य में किसी को भी शाप न देने का अनुरोध करते हैं। सर्ग का समापन अष्टावक्र की उन आशापूर्ण भविष्य वाणियों से होता है जिनमें वे कहते हैं कि उनके पिता का शाप विश्व के विकलागों के लिए एक मंगल मय वरदान है क्योंकि अष्टावक्र शीघ्र ही उनके आदर्श सिद्ध होंगे।

संकट–

कवि संकट की अवधारणा प्रस्तुत करते हैं जो मित्रता, कुशलता, बुद्धि एवं गुणों के लिए एक परीक्षा केन्द्र के समान है।

अष्टावक्र का गर्भस्थ शरीर एक कछुए के अंडे की भाँति हो जाता है। ऋषि कहोल शिशु को दिए अपने शाप पर पश्चात्ताप अनुभव करने लगते हैं।ऋषि का पाप जंगल में अकाल के रूप में प्रत्यक्ष दृष्टि गोचर होता है और कहोल के समस्त शिष्य आश्रम छोड़कर चले जाते हैं। जंगल में पशु और पक्षी भूख.प्यास से मरने लगते हैं।सुजाता कहोलको राजा जनक के यज्ञ में जाने औरशास्त्रार्थ में ज्ञानियों की सभा को पराजित कर कुछ धन लाने के लिए कहती है। इच्छा न होते हुएभी ए कहोल मिथिला जाते हैं। किन्तुवरुण का पुत्र बन्दी उन्हें शास्त्रार्थ में हरा देता हैं औरउन्हें वरुण पाश में बाँध कर समुद्रके जल में डुबो देते है। उधर जंगल में सुजाता एक पुत्र को जन्म देती है उद्दालक सुजाता की सहायता के लिए आते हैं और उसे कहोल के साथ घटित प्रसंग के बारे में बताते हैं। वे उस से इस प्रसंग को शिशु से गुप्त रखने को कहते हैं क्योंकि अपने पिता की पराजय का ज्ञान शिशु के व्यतिव के विकास में बाधक बन सकता है।उद्दालक शिशु का जात कर्म संस्कार सम्पन्न करते हैं शिशु को प्रत्येक व्यक्ति अष्टवक्र आठ वक्र या टेढ़े अंगों से युक्त कहकर बुलाता है किन्तु उद्दालक उसका नामकरण अष्टावक्र करते हैं जिसके अर्थ यहाँ प्रस्तुतहै।अष्टावक्र द्वारा अपने नाना के आश्रम में बड़े होने के साथ सर्ग का समापन होता है।

संकल्प–

सर्ग का प्रारम्भ संकल्प की अवधारणा से होता है। कवि कहते हैं कि सात्त्विक संकल्प ही सत्य एवं पवित्र संकल्प होते है। अष्टावक्र विकलांग उत्पन्न हुए हैं औरउसी समय उद्दालक के यहाँ श्वेतकेतु नामक पुत्र का जन्म होताहै। दोनों मामा और भांजे एक साथ उद्दालक के आश्रम में बड़े होते हैं। किन्तु उद्दालक अपने सकलांग पुत्र श्वेत केतु की अपेक्षा विकलांगदौहित्र अष्टावक्र से अधिक प्रेम करते है। अष्टावक्र उद्दालक से ज्ञान प्राप्ति में श्वेतकेतु समेत अन्य समस्त शिष्यों से भी आगे बढ़कर सर्वश्रेष्ठ सिद्ध होते हैं। अष्टावक्र के दसवें जन्मदिवस के अवसर पर उद्दालक एक समारोह का आयोजन करते हैं। उद्दालक अष्टावक्र को अपनी गोद में बिठाकर उनका आलिंगन करने लगते हैं। यह देखकर श्वेतकेतु ईर्ष्याग्रस्त हो जाते हैं और अष्टावक्र से उनके पिता की गोद से नीचे उतर जाने को कहते हैं। श्वेतकेतु अष्टावक्र के समक्ष रहस्योद्घाटन करते हुए कहते हैं कि उद्दालक वस्तुतः उनके नाना हैं औरवह उनके वास्तविक पिता के सम्बन्ध में नहीं जानते तत्पश्चात श्वेत केतु अष्टावक्र की विकलांगता का उपहास उड़ाते हुए उनका अपमान करता है। सुजाता से अपने वास्तविक पिता कहोल के सम्बन्ध में सुनकर अष्टावक्र श्वेतकेतुको उन्हें जागृत करने के लिए धन्यवाद देते हैं।अष्टावक्र अपने पिता के बिना उद्दालक के आश्रम में न लौटने का दृढ़निश्चय करते हैं। अष्टावक्र का संकल्प विश्व के समक्ष प्रदर्शित करेगा कि विकलांग किसी भी वस्तु को जिसका वे स्वप्न देखते हैंएप्राप्त करने में समर्थ हैं।

साधना–

कवि स्पष्ट करते हैं कि साधना संकल्प की शक्ति एवं सफलता का मन्त्र है। अष्टावक्र सतत चिन्तित रहते हैं कि वे किस प्रकार अपने पिता को बन्दी के बन्धन से मुक्त कराऐं।वे प्रतीति करते हैं कि कहोल के गलत होने के पश्चात भी कहोल की अशुद्धियों को प्रकट कर उनका प्रतिरोध करने का उनका अधिकार नहीं था। वे इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि उनके प्रतिरोध की परिणति कहोल को क्रुद्ध करने में हुई जिसके कारण उन्हें यह दुर्भाग्य पूर्ण श्राप मिलाए क्योंकि क्रोध मनुष्य का सब से भयंकर शत्रु है। अष्टावक्र वेद, उपवेदन्याय, मीमांसा धर्म, आगम एवं अन्य ग्रन्थों में प्रवीणता प्राप्त करने का निश्चय करते हैं।वे उद्दालक से इन ग्रन्थों का अध्ययन कराने की प्रार्थना करते हैं। अत्यन्त ही अल्प समय में अष्टावक्र अपने एकश्रुतविलक्षण गुण की सहायता से उद्दालक द्वारा शिक्षित प्रत्येक ग्रन्थ में पाण्डित्य प्राप्त कर लेते हैं। समावर्तन संस्कार के अवसर पर उद्दालक अष्टावक्र को आत्मा के सम्बन्ध में अन्तिम उपदेश प्रदान करते हैं और तदोपरान्त उन्हें अपने पिता की मुक्ति के उद्देश्य से राजा जनक की सभा में जाने का आदेश देते हैं।उद्दालक पश्चात्ताप से ग्रस्त श्वेत केतु को जिन्होने पूर्व में अष्टावक्र का अपमान किया था अष्टावक्र के सहित भेजने का निश्चय करते हैं।अष्टावक्र यह निश्चय

करते हुएकि पिता की मुक्ति ही उनकी सच्ची गुरु दक्षिणा होगी उद्दालक को प्रणाम करते हैं। उद्दालक उन्हें विजयी होने का आशीर्वाद प्रदान करते हैं।माता सुजाता भी उन्हें अपना आशीष देते है। अष्टावक्र अपने मामा श्वेतकेतु के सहित मिथिला की उद्देश्यपूर्ण यात्रा के लिए निकल पड़ते हैं।

सम्भावना–

सर्ग के प्रथम दस पद्यों में सम्भावना अथवा योग्यता का वर्णनअत्यन्त सजीवता से प्रस्तुतकिया गया है। जब अष्टावक्र मिथिला पहुँचते हैं तो उस समय वे आत्म विश्वास से परिपूर्ण हैं। राजा जनक की मिथिला नगरी वेदों एवं आस्तिक दर्शन की छहों शाखाओं में निष्णात विद्वानों से भरी हुई है। बारह वर्षीय अष्टावक्र एवं श्वेतकेतु की अपने दरबार की ओरजा रहे राजा जनक से अनायास भेंट हो जाती है। जनक अपने सुरक्षाकर्मियों से विकलांग बालक को अपने पथ से हटाने के लिए कहते हैं।किन्तुए अष्टावक्र ऐसा करने के स्थान पर जनक को स्वयं उनके लिए पथ देने के लिए कहते हैं क्योंकि वे अष्टावक्र धर्मग्रंथों में पारंगत ब्राह्मण हैं। अष्टावक्र के तेजसे प्रसन्न होकर जनक उनसे कहते हैं कि वे मिथिला में किसी भी स्थान पर भ्रमण करने के लिए स्वतन्त्र हैं। किन्तु जनक का द्वारपाल अष्टावक्र को राजदरबार में प्रवेश नहीं करने देता है और उनसे कहता है कि मात्र ज्ञानी एवं बुद्धिमान वृद्ध जन ही जनक के दरबार में प्रवेश करने के अधिकारी हैं।किन्तु अष्टावक्र द्वारपाल को अपनी वृद्ध की परिभाषा कि मात्र ज्ञान में परिपक्व व्यक्ति ही वृद्धजन कहलाने योग्य हैं के द्वारा अवाक् कर देतेहैं। तब द्वारपाल उन्हें याज्ञवल्क्य गार्गी एवं मैत्रेयी जैसे विद्वानों से अलंकृत सभा में प्रवेश करने की अनुमति प्रदान कर देता है। अष्टावक्र बन्दी को शास्त्रार्थ करने के लिए खुली चुनौती देते हैं। किन्तु जनक अष्टावक्र से पहले उन्हें विवाद में सन्तुष्ट करने को कहते हैं और उनके समक्ष छह गूढ़ प्रश्न प्रस्तुतकरते हैं जिनका अष्टावक्र संतोष जनक रूप से समाधान करते हैं। तत्पश्चात् जनक उन्हें बन्दी से शास्त्रार्थ करने को कहते हैं। बन्दी मन ही मन समझ जाता है कि वह अष्टावक्र से हार जाएगा परन्तु उनसे विवाद करने का निश्चय करता है। बन्दी अष्टावक्र की परीक्षा लेने हेतु उनकी विकलांगता का उपहास उड़ाने लगता है जिस पर सभा हँसने लगती हैं। अष्टावक्र बन्दी और सभा दोनों को कड़ी फटकार लगाते हैं और सभा से जाने के लिए उद्यत हो उठते हैं।

समाधान–

कवि कहते हैं कि समाधान प्रत्येक काव्यात्मक रचना का चरम लक्ष्य है और रामायण को कालातीत रूपक के रूप में प्रयुक्त करते हुएवे इस अवधारणा को व्याख्यायित करते हैं। जनक अष्टावक्र से बन्दी द्वारा किए गए अपमान के लिए क्षमा माँगते हैं और अष्टावक्र शान्त हो जाते हैं। वे जनक से निष्पक्ष निर्णायक की भूमिका निभाने का अनुरोध करते हुए बन्दी को पुनः वाग्युद्ध के लिए ललकारते हैं। अष्टावक्र कहते हैं कि बन्दी विवाद प्रारम्भ करें और वे उनके प्रश्नों का प्रत्युत्तर देंगे विवाद आशुकाव्य के रूप में प्रारम्भ होता है। बन्दी एवं अष्टावक्र एक–एक करके एक से बारह की संख्या पर पद्यरचना आरंभ करते हैं। बन्दी तेरह संख्या के लिए पद्य का मात्र प्रथमार्द्ध रच पाता है किन्तु शेष आधा भाग रचने में असफल रहता है। तब अष्टावक्र पूरे पद्य की तुरन्त रचना कर देते हैं और इस प्रकार बन्दी को पराजित कर देते हैं। सभा उनकी जय–जयकार करने लगती है औरजनक उन्हें अपने गुरुके रूप में स्वीकार करते हैं। बन्दी अपने रहस्य का उद्घाटन करते हुएकहता है कि वह वरुण का पुत्र है और उसने अपने पिता के बारह वर्ष से चल रहे वरुण यज्ञ में सहायता के लिए कहोल को अनेक अन्य ब्राह्मणों के सहित जल में डुबोकर वरुण लोक भेज दिया था। वह अपनी पराजय स्वीकार करता है और अष्टावक्र के समक्ष समर्पण कर देता है। वयोवृद्ध ऋषि याज्ञवल्क्य भी बालक अष्टावक्र को प्रणाम करते हैं और उन्हें अपना गुरुस्वीकार करते है। बन्दी वापिस समुद्रमें चला जाता है जहाँ से कहोल ऋषि लौट आते हैं। महर्षि कहोल अपने पुत्र से कहते हैं कि वे उन्हें मुक्त कराने के लिए सदैव उनके ऋणी रहेगें। अष्टावक्र पिता से प्रतीक्षारत माता के समीप लौट चलने के लिए अनुरोध करते हैं। घर की ओर लौटते समय रास्ते में कहोल अष्टावक्र को गंगा की पुत्री समंगा नदी में

स्नान करने को कहते हैं। नदी में स्नान करते ही कहोल के तप के बल से अष्टावक्र की विकलांगता समाप्त हो जाती है। सुजाता अपने पति एवं सकलांगपुत्र को देखकर हर्ष से फूली नहीं समाती। अष्टावक्र आजीवन ब्रह्मचारी रहते हैं और एक महान ऋषि बनते हैं। महाकाव्य के अन्त में रामायण के युद्ध के पश्चात महर्षि अष्टावक्र अयोध्या में पर ब्रह्म भगवान श्री सीता रामजी के राजदरबार में पधारते हैं। अष्टावक्र रानी औरराजा की सुन्दर जोड़ी को निहार कर आनन्दित हो उठते हैं। सीता अपने पिता के गुरुको प्रणाम करती हैं औरअष्टावक्र उन्हें आशीर्वचन प्रदान करते हैं।

संदर्भग्रन्थ–

1.अष्टावक्र गीता, 19/1
2.प्रज्ञापुराणं कथा मृतम्, 1/2/1प्रकाशन युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि, मथुरा
3.प्रज्ञा पुराण कथा मृतम्, 1/2/1प्रकाशन युग निर्माण योजना, गायत्री तपोभूमि,मथुरा
4.श्रीमद्भगवद्गीता, 3/20